UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 5.427 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 10.1 Year - 11 October, 2020

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, **Website :** shodhdrishti.com, **Mob.** 9415388337

☞	Comparison between Adolescent Boys and Girls in terms of Personal Problems, Personal Values and Patterns of Adjustment **Vineeta**	138-144
☞	Family Climate, Adjustment and Mental Health Influencing Study Habit amongst Female Students **Richa Kumari**	145-148
☞	Online Retailing in India: Challenges & Pre-requisite Factors for Potential Growth **Dr. Anand Singh**	149-153
☞	मुगलकालीन चित्रकला का विवेचनात्मक अध्ययन **पंकज कुमार**	154-156
☞	विकासखण्ड सोंधी (जनपद–जौनपुर) में लिंगानुपात के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन **डॉ० अनामिका सिंह एवं प्रशान्त यादव**	157-160
☞	काशी : एक पौराणिक अध्ययन **सुशील कुमार पाण्डेय**	161-168
☞	अनुसूचित जातियों के अधिकारों के संरक्षण के लिए संवैधानिक, विधिक एवं अन्य उपकरण **धम्मप्रियगौतम एवं डॉ0 संतोष कुमार सिंह**	169-172
☞	जैनेन्द्र की कहानियों में नारी भविता **सत्यवीर सिंह**	173-174
☞	महिलाओं के स्वास्थ्य की स्थिति : कार्यक्रम और सुधार **डॉ० अनु रस्तौगी एवं रीतू गुलाठी**	175-178
☞	Chausatha Yoginis: The Assisting Goddesses of Kashi **Nikita Singh Raghuvanshi**	179-186
☞	मौर्य युगीन कलात्मक उन्नति की संक्षिप्त यात्रा **डॉ0 अर्चना सिंह**	187-190
☞	सार्वजनिक कला के रूप में दिल्ली के भित्त चित्र : एक अध्ययन **डॉ0 लक्ष्मण प्रसाद**	191-196
☞	सर जॉन वुड्रोफ का तांत्रिक साहित्य एवं कला में योगदान "एक अवलोकन" **दिनेश पाल**	197-202

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 5.427
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 11, No. 10.1, October, 2020 ISSN : 0976-6650

सर जॉन वुड्रोफ का तांत्रिक साहित्य एवं कला में योगदान
"एक अवलोकन"

दिनेश पाल
सहायक आचार्य, प्रदर्शन एवम दृश्य कला स्कूल, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला (हि.प्र.)

संक्षेप

सर जॉन जॉर्ज वुड्रोफ बाहरी स्वरुप से तो विदेशी जान पड़ते हैं किन्तु उनकी आंत्मा भारतीय संस्कृति में रची बसी थी।[1] उन्होंने अपने प्रशासनिक जीवन के साथ-साथ अपने अध्यात्मिक जीवन को विकास के उच्चतर शिखर पर पंहुचा दिया। जिसके लिए उन्होंने भारतीय परिवेश के अति प्राचीन ज्ञान तंत्र साधना का सहारा लिया साधना के मार्ग पर बढ़ने के लिए उनके सामने भाषा की जो दिवार थी उसे उन्होंने संस्कृत को आत्मसात करके लाँघ दिया। उन्होंने तंत्र साधना के मार्ग को सर्वसुलभ करने के लिए तत कालीन संस्कृत और तंत्र के विद्वानों को साथ लेकर तंत्र साहित्यों के अनुवाद, व्याख्या तथा संकलन का जो बीड़ा उठाया उसे मुकाम तक पहुचाने के लिए वे जीवन पर्यंत तत्पर रहे और अपने दुस्कर कार्य से वे सम्पूर्ण विश्व में अनंत कल के लिए अमर हो गए। इस शोध पत्र के माध्यम से सर जॉन जॉर्ज वुड्रोफ के साधक जीवन और उनके द्वारा तंत्र साहित्य में दिए गए अभूतपूर्व योगदान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

सर जॉन जॉर्ज वुड्रोफ (15 दिसंबर 1865 - 16 जनवरी 1936), जिन्हें उनके छद्म नाम आर्थर एवलॉन के नाम से भी जाना जाता है, एक ब्रिटिश ओरिएंटलिस्ट थे, जिनकी तंत्रों और अन्य हिंदू परंपराओं पर व्यापक और जटिल प्रकाशित रचनाएँ, हिंदू दर्शन में व्यापक रुचि को प्रेरित करती थीं और योग[2]।

प्रारंभिक जीवन परिचय-

जॉन जॉर्ज वुड्रॉफ़ का जन्म 15 दिसंबर 1865 को कलकत्ता में जेम्स टिस्डल वुडरोफ़ और फ्लोरेंस ह्यूम के यहाँ हुआ था और जनवरी 1866 में सेंट पीटर्स एंग्लिकन चर्च में बपतिस्मा लिया था। उनके बाद तीन भाई और तीन बहनें पैदा हुईं। उनके पिता, जेम्स टिस्डल वुड्रोफ़, एक बहुत ही महान व्यक्ति थे। उच्च न्यायालय के सफल और धनी बैरिस्टर। १८९९ और १९०४ के बीच वे बंगाल के महाधिवक्ता और वायसराय की परिषद के सदस्य थे।

जॉन की माँ का जन्म भारत में एक ऐसे परिवार में हुआ था जो कई पीढ़ियों से भारत में रहा था। उनके पिता, जेम्स ह्यूम, कलकत्ता के प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट और एलन ऑक्टेवियन ह्यूम के चचेरे भाई थे, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे।१८७५ में माता-पिता रोमन कैथोलिक धर्म में परिवर्तित हो जाते हैं तथा १८९४ में जॉन की माँ का अड़तालीस वर्ष की आयु में निधन हो गया।[3]

25 वर्षीय एलेन एलिजाबेथ ग्रिमसन से शादी की, जो एक संगीत कार्यक्रम पियानोवादक है। वह शादी से पहले कभी भारत नहीं गई। जॉन और एलेन को शास्त्रीय संगीत से प्यार था और वे भारतीय दर्शन के प्रति आकर्षित थे। उस समय के कई कलाकारों की तरह एलेन की भी थियोसोफी में दिलचस्पी थी।

शिक्षा दीक्षा

जॉन जॉर्ज वुड्रॉफ़ ने कानून की शिक्षा दीक्षा ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से प्राप्त की, उस समय प्रसिद्ध भाषाविद् और प्राच्यविद् मैक्स मुलर ऑक्सफोर्ड में एक प्रमुख व्यक्तित्व थे। जॉन वुडरॉफ ने बैचलर ऑफ सिविल लॉ की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात एक साल बाद अपने पिता के साथ कलकत्ता भारत आगये । भारतीय कानून का विशेष अध्ययन करने के उपरांत जल्द ही खुद को भारतीय कानून के विशेषज्ञ के रूप में साबित किया।